प्रातः क्लास 31-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। जिनमें अज्ञान है। यानी कि ज्ञान नही है। अज्ञान के कारण तुम्हारी आत्म डल हो गई है। हीरे मे चमक होती है नां। पत्थर मे चमक नही होती है। इसलिये ही कहा जाता है कि पत्थर मिसल डल हो गये हो। फिर जागते है तो कहा जाता है कि यह तो जैसे कि पारस-मणी है। अभी अज्ञान के कारण आत्मा डिम हो गई है। काली नही होती है। यह तो नाम ही रखा हुआ है। उआत्मा तो सभी की एक जैसी ही होती है। शरीर कैसे काले-2 भी होते है। अफ्रीका की नरफ कितने काले है। शरीरो की अदावत अनेक प्रकार की है। आत्मा तो एक ही है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि हम आत्मा है बाप के बच्चे है। यह सारा ज्ञान था। वो फिर धीरे-2 निकल गया है। निकलते-2 आखरीन कुछ नही रहा है तो कहेगे अज्ञान। तुम भी अज्ञानी थे अभी ज्ञान सागर से ज्ञानी बनते जाते हो। आत्मा तो बहुत सूक्ष्म है। इन आखो से देखने में नही आती है। बाप आकर समझाते है बच्चे को नालेजफुल बनाते है तभी सुजाग होते है। घर-2 मे रोशनी होती जाती है। घर-2 मे अन्धेरा था अर्थात आत्मा डिम हो जाती है। अभी बाप कहते है कि मुझे याद करो तो लाईट आ जावेगी। तुम फिर ज्ञानवान बन जावेगे। बाप किसीकी ग्लानी नही करते है यह तो ड्रामा का राज समझाते है। बच्चों को कहा है नां यह सभी मूढ़मति हो गये है कौन कहते है? बाप। बच्चे तुम्हारी कितनी सुन्दर बुधी श्रीमत पर बनी थी अभी तुम फील करते हो नामनुष्य तो बिलकुल ही जानवर मिसल है। बाप को ही नही जानते है। अभी तुम बच्चे को बाप ने ज्ञान दिया है। ज्ञान को ही पढाई कहा जाता है। बाप की पढाईसे हमारी ज्योति जग गई थी। उसको ही सच्ची-2 दिवाली कहा जाता है। छोटे पन मे ठिक्कर के दीवे मे तेल डाल कर ज्योत जगाते थे। वो ही रस्म चलती रहती है। उससे कोई दीपावली नही होती है। यहां पर तो जो अन्दर मे आत्मा है वो डिम हो गई है। उनकी ही ज्योति बाप आकर जगाते है। बच्चे को आकर नालेज देते है। पढ़ाते है। स्कूल मे टीचर्स पढ़ाते है नां। वो तो है हद की नालेज। यह है बेहद की नालेज। कोई साधु सन्त आदि पढ़ाते है क्या? रचता और रचना के आ: म: अ: की नालेज कभी सुनी? कभी कोई ने पढाई है? जाकर देखो कि कही पर भी यह नालेज कोई भी पढ़ाते है? सिर्फ एक ही बाप पढ़ाते है। तो उनके ही पास पढ़ना चाहिये नांकाप अन्यास ही आ जाते है। ढ़िढोरा थोडे ही पिटवाते है कि मैं आ रहा हूं। अन्यास ही आ जाते है। वो आवाज तो कर नही सकते है। जब तक कि उनको अंग नही मिले। आत्मा वा परामत्मा अंगो बिना आवाज नही करते है। शरीर मे जब आते है तभी आवाज करते है। तुम समझाओ तो कोई भी मानेगे नही। बच्चों को जब यह नालेज दी जाती है तो ही समझते है कि यह नालेज तो बाप के बिना और कोई दे नही सकते है। विनाश को का सा0 कोई भी देखना चाहते थोडे ही है। यह तो बाप ही कराते है। पुरानी दुनियां अभी खत्म होनी है। नईदुनियां मे तोईनका राज्य था सो स्थापन हो रहा है। ड्रामा अनुसार ही जिनको बाप से नालेज लेनी है वो तो आते ही रहते है। कितनों को तुमने ज्ञान दिया होगा? अणगिनत। गांव-2 से कितने ढेरो आते है। यह आत्मा और परमात्मा का बहुत बडा मेला है। दिन प्रति दिन मेला बढ़ता ही जावेगा। उस कुम्भ के मेले पर पहले तो पाचं हजार जाते थे फिर दस बीस हजार फिर आजकल तो सात-दस लाख भी जाते है। तुम बच्चे समझ गये हो कि आत्म परमात्मा का मेला तो एक ही बार होता है संगम पर ही बाप आते है। वो ही आकर नई दुनियां की स्थापना करेगे। जिनकी ज्योति जगाते है वो फिर जाकर औरो की ज्योति जगाते है। अभी तो तुम सभी को वापस जाना है। इसमे तो बुधी से काम लेना होता है। भक्ति मार्ग मे तो है ही अन्धेरा। ज्ञान बिना है घोर अन्धेरा। ज्ञान देने वाला तो एक बाप ही चाहिये। वो आते है संगम पर। पुरानी दुनियां मे मिल नही सकता है। कलयुग को पुरानी दुनिया कहा जाता है। सो ही वो तो चल रहा है। मनुष्यो के खयाल मे तो है कि अभी तो 40 हजार साल पड़े है। बिलकुल ही घोर अन्धेर मे है। समझते है कि 40हजार साला के बाद भगवान जरूर आवेगे। आकर ज्ञान सदगति करेगे। तो गोया कि अज्ञान मे है नां। इनको ही अज्ञान अन्धेरा कहा जाता है। अज्ञान वालो को तो

ज्ञान चाहियेनां। भक्ति को तो ज्ञान नही कहा जाता है। आत्म मे ज्ञान है नही। परन्तु डल बुधी होने कारण सें समझते है कि यह (भक्ति) ही ज्ञान है। एक तरफ तो कहते है भी है कि ज्ञान सूर्य ओन से ही सोझरा होगा परन्तु समझते तो कुछ भी नही है। गाते भी है कि ज्ञान सूर्य प्रगटया अज्ञान अन्धेरे विनाशकिस समय के लिये कहते है? ज्ञान सूर्य कब आया है सो तो कोई भी नही सजानते है। पण्डित आद कोई होग तो कहेगे कि जब भगवान ओवगा तो ही सोझरा होगा। यह सभी बाते बाप ही आकर बच्चो को समझाते है। बच्चे तो फिर नम्बरवार ही समझते है। टीचर ही बैठ बच्चो को पढाते है। एक रस तो सभी नही पढेगे नां। पढाई मे तो एक रस नम्बर कब भी होते नही है। तुम जानते हो कि अभी हम नई दुनियां स्वर्ग मे जाते है। अब पुरानी दुनियां का विनाश तो जरूर होना है। वेहद का बाप आया हुआ है। अभी पुरानी दुनियां का तो विनाश भी सामनें खडा है। अभी बाप से ज्ञान भी लेना है और योगभी सीखना है। याद से ही विकर्म विनाश होगे। बाप कहते है कि सांझ युग पर ही आकर इस शरीर का लोन अर्थात प्रकृति का आधार लेता हूं। गीता मे भीयह अक्षर है। कोई भी शास्त्र का नाम बाबा नही लेते है। एक ही गीता है। यह है ही राजयोग कह पढाई। नाम रख दिया है गीता। उसमे ही पहले-2 लिखा हुआ है भगवानोवाच:-। अभी भगवान किसको कहा जाता है? भगवान तो है ही निराकार। उनको तो अपना शरीर है नही। जैसे आत्मा भी निराकार है नां। वो तो है ही निराकारी दुनियां जहां पर आत्मांये रहती है। सूक्ष्म वतन को दुनियां नही कहा जाता है। यह है स्थूल साकार दुनियां। वो है मूलवतन आत्माओं की दुनियां। खेल तो सारा ही यहां पर चलता है। निराकारी दुनियां मे तो आत्मांये कितनी छोटी-2 है। वो आत्मांये ही फिर यहां पर आकर शरीर लेती है पार्ट बजाने लिये। यहखयालात तुम बच्चो की बुधी मे बिठायाजाता है। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। बाकी शास्त्र आद तो कुछ भी है नही। बाप कहते है कि इन वेदो शास्त्रोकहा जाता है भक्ति मार्ग। ज्ञान नही। तुम्हारा साधु सन्यासी आदी से इतना सामना नही हुआ है। बाबा कोबहुत अनुभव है। सभी के साथ। बहुत गुरु किये है। उनसे पूछा जाता है कि आपने सन्यास क्यो कि या? घर-बार क्यो छोडा? कहते थे कि विकारो से तो बुधी भ्रष्ट होती है इसलिये ही छोडा जाता है। अच्छा जंगल मे जाकर रहते हो घर-बार की याद तो आती ही होगी? बोले हां। बाबा का देखा हुआ है। एक तो फिर वापस भी आ गया था। यह भी शास्त्रो मे है कि एक सन्यासर्ई की स्त्री ने जाकर गुरु को रिपोर्ट की कि यह हमारा पति एकभी बच्चा हमको दे कर नही क्या है तो कुल की वृधी कैसे होगी। एकज्ञाने गीता मे ऐसी कथा लिखी हुई है। वो स्त्री को बच्चा देने बिना भागा था। तो गुरु को ने उनको वापस भेजा कि जाकर एक बच्चा देकर आओ। तो ऐसी कहानी बकवास लिख दी है। पास्ट की बाते है नां। उसने कहा कि जाओ। अब सन्यास लेकर वो ड्रेस आद पहनफिर छूटे हुये घर मे वापस ओय तो सभी मनुष्य क्या कहेंगे? यह क्या कोई कुत्ता भागा हुआ स्त्री के आया है। तो उनका दम ही निकाल दिया। घुटका खाकर आया। एक बच्चा देकर फिर गया। यह एक कहानी लिखी हुई है। अनेक प्रकार की बाते है। वाणप्रस्थ अवस्था मे ही तब जाते है जबकि आयु बडी हो जाती है। छोटी अवस्था मे तो वाणप्रस्थ मे जाना ही नही चाहिये। कुम्भ के मेले मे बहुत छोटे-2 नागे लोग आते है। दवाई खालेते है जिसकि कर्मइन्द्रय ठण्डी पड जाती है। तुम्हारा तो है योगबल से कर्म इन्द्रयो को वश मे करना। योग बल से वश होते-2 आखरीन तो ठण्डी हो ही जावेगी। कईतो लिखते है कि वाला माया तो बहुत ही तंग करती है। बैटरी डिर्चाज हो जाती है। वहां पर तो ऐसी बाते होती ही नही है। कर्म इन्द्रय वश मे तभी होगी जबकि योग मे तुम पक्के होगे। कर्म इन्द्रयां शान्त हो जोवगी। इतनी बडी मेहनत है। वहां पर तो ऐसा छी-2 काम कोई होता नही है। बाप आये है ऐसे स्वर्ग धाम मे ले जाने। तुमको लायक बना रहे है। माया ने तो तुमको नालायक बनाया है। अर्थात स्वर्ग वा मुक्तिधाम जीवनमुक्तिधाम मे चलने लायक नही है। तो बाप बैठ लायक बनाते है। तो इसके लिये ही प्योरटी तो है फर्स्ट। प्योरटी है तो पीस पराससपेरटी तो है ही है। गाते भी है कि बाबा हम पतित बन गये है। हमको बाबा पावन बनाओ। पावन माना ही पवित्र। गायन भी है कि अमृत छोड विख काहे को खाते हो? इसका

(31-8-68 प्रातः का चैथा पेज है।)

सहज युक्तियां बताते रहते हैं। तुमको अभी समझ मिली है। परमपिता परमात्मा ही सर्व का सदगति दाता है। 21 जन्म लिये सदगति मिल जाती है। 21 जन्मों का वरसा अभी की पढ़ाई से मिलती है। टापिक्स बहुत हैं। वेश्यालय और शिवालय किसको कहा जाता है यह टापिक। परम पिता परमात्मा की जीवन कहानी हम आप को बता सकते हैं। यह टापिक। लक्ष्मी नारायण के 84 जन्मों की कहानी यह टापिक। विश्व में शान्ति कैसे फिर अशान्ति कैसे हुई। अभी फिर शान्ति कैसे स्थापन हो रही है यह भी टापिक हैं। कितने टापिक्स हैं।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रही हुई पायन्टस :- तुम बच्चों को तो बहुत ही हर्षित हो नाचाहिए। मुख से है भगवान भी नहीं निकल सकता। इसमें बहुत समझ चाहिए। तुम बहुत ही समझदार बन रहे हो। कोई कहे कि कृपा करो, । बाप कहते हैं मैं तो सिर्फ रास्ता बताने आया हूं। बाकी कृपा आदि कुछ नहीं करता हूं। गुरु लोग तो सिर्फ मंत्र देते हैं। और क्या करते हैं। बिमार पड़ते हैं। तो मलहम पट्टी करते हैं क्या। सिर्फ मंत्र देते हैं। और क्या करते हैं। बाप भी कहते हैं मन्मनाभव। मुझे याद करो तो सभी पाप कट जावेंगे। सर्व का सदगतिदाता पावन करने वाला और कोई है नहीं। गुरु लोग पतित पावन होते हैं क्या। नाम कितने बड़े2 हैं। श्री श्री 108 जगदगुरु कितनी ठगी हुई। तब बाबा कहते हैं। मनुष्य तो कहते हैं बाबा इन्हों को असुरी सम्प्रदाय क्यों कहते। परन्तु यह तो कल्प2 कहते आये हैं ना। वह है आसुरी सम्प्रदाय। वह दैवी सम्प्रदाय। कितना सहज है। अपने दिल से पूछो बाबा राईट ~~बाबा राईट कहते~~ कहते हैं नाराईटस बनाते हैं। तो जो राईट बनाते हैं वह फिर अनराईटियस कैसे बनावेंगे। मनुष्य फिर कह देते हैं सुख दुःख भगवान ही देते हैं। और भगवान दुःख थोड़े ही देंगे। बच्चे मर जाते हैं तो भगवान को डोसा देते हैं। बाप कहते हैं कब मैं किसको दुःख नहीं देता हूं। मैं तो अपार सुख देने वाला हूं। दुःख माया रावण देती है। मनुष्य कितने मूर्ख बन पड़ते हैं। बेहद का मूर्खपना बाप ही सिध कर बतलाते हैं।

अर्थ क्वेस्चन भी होते रहेंगे। उनके बिगर डांवाडोल कैसे होगा। इनको कहा जाता है कुदरती आपदायें। नहीं तो कलियुग का विनाश कैसे हो सकता। जब कि अनेक धर्म है। बाप आकर सभी राज़ समझाते हैं। और दिखलाते हैं। विनाश स्थापना इसने भी देखा तब तो निश्चय हुआ ना। इसने विनाश तो बहुत ही जोर से देखा। औ फिर यह भी देखा हम यह बन रहे हैं। सभी कहते थे इनको क्या हो गया। है बैठे बैठे। उस समय मैं मैं बम्बई में था। बबुलनाथ मंदिर के सामने आकर उतरा था। तुम हो मीठे2 बच्चे। यह कौन कहते हैं। बेहद का बाप, जो स्वर्ग का रचयिता है। अभी कहते हैं और संग तोड़ मुझ एक साथ जोड़ो। मैं भल तुम सभी को देखता हूं परन्तु मेरी बुधि शान्तिधाम, सुखधाम में है। वहां ही जाना है ना। बाप समझा सकते हैं। तुम समझा सकते हो तो क्या हम नहीं समझा सकते हैं। तो इसको कहा जाता है ईश्वरीय मिशन। यहां हम राजयोग सीखते हैं। कौन सिखलाते हैं? भगवान। भगवानुवाच काम महाशत्रु है इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। जगतजीत बनना इसको ही राजयोग कहा जाता है। यह है विकारी दुनिया। वह है निर्विकारी दुनिया। अभी ऐसा बनना है। नर से श्री नारायण बनने के लिए तुमको नालेज मिलती है। तुम जानते हो हम बाबा के पास बैठे हैं। बाप कहते हैं ~~मुझे~~ मुझे याद करो फिर बैठ पढ़ाते हैं। पढ़ाने लिए कितनी मेहनत कर चित्र आदि बनाते हैं। प्रजा बहुत बनती है। बाकी राजा महाराजा तो थोड़े ही बनते हैं। एक महाराजा को लाखों करोड़ प्रजा होती है। इसलिए कहा जाता है कोटों में कोई राज पद पाते हैं।

अच्छा।

-: शिव बाबा और स्वर्ग की बादशाही याद है?:-